RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 74, अंक : 41 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 31 दिसम्बर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074, सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–74, अंक : 41, 28-31 दिसम्बर 2017 तदनुसार 17 पौष सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

मरने से पूर्व भगवान् को रक्षक बना लो

ले०–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः।
अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम्।।

–ऋ० ४।३।१

शब्दार्थ–तनयित्नोः = मृत्युरूप विद्युत् के द्वारा **अचित्तात्** = अचेत होने से **पुरा** = पूर्व ही **अध्वरस्य** = यज्ञ के **राजानम्** = प्रकाशक **होतारम्** = होता **रोदस्योः** = दोनों लोकों के **सत्ययजम्** = सच्चे याज्ञिक, ठीक-ठीक सङ्गति करने वाले **रुद्रम्** = रुद्र, भयङ्कर, किन्तु **हिरण्यरूपम्** = हितकारी और रमणीय कान्तिवाले **अग्निम्** = भगवान् को **अवसे + आ+ कृणुध्वम्** = रक्षक बना लो।

व्याख्या–भगवान् ने यह जो संसार रचा है, यह एक यज्ञ है और ऐसा यज्ञ जो अध्वर है। अध्वर=अध्व-र, मार्ग देने वाला। जीव को उन्नति का मार्ग इसी संसार में मिलता है, अतः यह अध्व-र=मार्ग देने वाला है। संसार में हम प्रतिदिन भयङ्कर मारकाट, घातपात, रक्तपात देखते हैं, परन्तु वास्तव में यह यज्ञ तो अ-ध्वर-अ-हिंस=हिंसारहित है। इस संसार-यज्ञ का पुरोधाः पुरोहित=ब्रह्मा भगवान् अत्यन्त दयावान् है, उसमें क्रूरता नाम को भी नहीं। उसके अध्वर में सम्मिलित होने के लिए तू भी अध्वर-हिंसारहित होके आ। भगवान् ने इस संसार-यज्ञ की सब व्यवस्था सत्य पर की है। स्वयं भगवान् ने कहा–**'सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति'** [अथर्व० १२।१।१] = महान् सत्य, उग्र ऋत, दीक्षा, तप, ब्रह्म और यज्ञ इस पृथिवी को धारण किये हुए हैं। जब उसने विश्व की व्यवस्था सत्य पर की है, तब तो वह अवश्य **'सत्ययजं रोदस्योः'** = दोनों लोकों का सच्चा याज्ञिक है। समस्त संसार की ठीक-ठीक व्यवस्था करता है। उसकी व्यवस्था के कारण पापियों को कष्ट मिलता है, वे रोते हैं, इससे इस संसार-यज्ञ का ब्रह्मा उन्हें रुद्र प्रतीत होता है। रुद्र प्रतीत होने पर भी वह **हिरण्यरूप** अत्यन्त सुन्दर, कमनीय है, बड़ा हितकारी है। दूर से अवश्य वह रुद्र=विकराल भासता है, किन्तु समीप से देखने पर वह हिरण्यरूप दिखाई देता है। मृत्यु सिर पर सवार है, जैसा कि उपनिषत् में कहा है–**महद्भयं वज्रमुद्यतं य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति** = महाभयङ्कर मृत्युरूप वज्र तैयार है, जो इसे जानते हैं, वे अमृत हो जाते हैं।

ऐसा न हो, मौत की बिजली तुम्हारे सिर पर गिरे और तुम समाप्त हो जाओ और हृदय की भावनाएँ हृदय में ही लेकर चले जाओ।

वेद कहता है–**'अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम्'** = मृत्यु-वज्र सिर पर पड़ने से पूर्व तुम हिरण्यरूप भगवान् को रक्षक बना लो। उसे यदि तुम रक्षक बना लो तो मृत्यु तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता, वह काल का भी काल है, किन्तु उसे मित्र बनाने में विलम्ब नहीं होना चाहिए। जाने कब मृत्यु सिर पर आ पड़े! ऋषियों ने ठीक कहा है–**'इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति'** [केनो०] = इसी जन्म में जान लिया तो ठीक है, अतः मरने से पूर्व उसे अपना लो।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

त्वमग्न इन्द्रो वृषभः सतामसि त्वं विष्णुरुरुगायो नमस्यः।
त्वं ब्रह्मा रयिविद् ब्रह्मणस्पते त्वं विधर्त्तः सचसे पुरन्ध्या।।

–ऋ० २.१.३

भावार्थ–परमात्मन्! आपके अनेक शुभ नाम हैं। जैसे अग्नि, इन्द्र, वृषभ, विष्णु, ब्रह्मा, ब्रह्मणस्पति आदि। ये सब नाम सार्थक हैं, निरर्थक एक भी नहीं। प्रभु अपने प्रेमी भक्तों पर सुख की वृष्टिकर्त्ता और सबके वन्दनीय और स्तुत्य आप ही हो। जितने महानुभाव ऋषि-मुनि हुए हैं, वे सब आपके भक्त गुण गाते-गाते कल्याण को प्राप्त हुए। आप अपनी उदार बुद्धि से अपने भक्तों को सदा मिलते और प्यार करते हैं।

त्वमग्ने द्रविणोदा अरंकृते त्वं देवः सविता रत्नधा असि।
त्वं भगो नृपते वस्व ईशिषे, त्वं पायुर्दमे यस्तेऽविधत्।।

–ऋ० २.१.७

भावार्थ–हे पूजनीय सबके नेता परमात्मन! जो भद्र पुरुष श्रेष्ठ कर्मों के करने वाले हैं, उनको आप धन देते हो, उन प्रेमी भक्तों के लिए ही आपने रमणीय सकल ब्रह्माण्ड धारण किये हुए हैं, जो श्रेष्ठ अपनी इन्द्रियों का दमन करके आपकी उपासना करते हैं, उनकी रक्षा करते हुए, उनको धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये चार पुरुषार्थ प्रदान करते हो।

त्वमग्ने प्रमतिस्त्वं पितासि नस्त्वं वयस्कृत्तव जामयो वयम्।
सं त्वा रायः शतिनः सं सहस्रिणः सुवीरं यन्ति व्रतपामदाभ्य।।

–ऋ० १.३१.१०

भावार्थ–हे परमपिता जगदीश! आप ही सबको सुबुद्धि प्रदान करते हैं, जीवनदाता और सबके पिता भी आप ही हैं। हम सब आपके बन्धु हैं, आप किसी से दबते नहीं, महासमर्थ होकर भी अपने अटल नियमों के पालन करने वाले हैं। सहस्रों प्रकार के ऐश्वर्यों के आप ही स्वामी हैं। हम आपकी शरण में आए हैं, हमें सुबुद्धि और अनेक प्रकार का ऐश्वर्य देकर सदा सुखी बनावें, हम सुखी होकर भी आपकी सदा भक्ति करते रहें।

कर्मफल सिद्धान्त विषयक

स्वामी दयानन्द की मान्यताएं

ले.-अर्जुन देव स्नातक 5, सीताराम भवन, फाटक आगरा कैण्ट, आगरा।

स्वामी दयानन्द द्वारा रचित 'आर्योद्देश्य रत्नमाला' के अनुसार जो मन, इन्द्रिय और शरीर में जीव चेष्टा विशेष करता है, वह कर्म कहाता है। इसके आगे 49 50 व 51वें रत्न में कर्म के भेद इस प्रकार वर्णित हैं-

1. **क्रियमाण**-जो वर्तमान में किया जाता है, वह कर्म क्रियमाण कहाता है।

2. **संचित**-जो क्रियमाण का संस्कार ज्ञान में जमा होता है, उसे संचित कहते हैं।

3. **प्रारब्ध**-जो पूर्व किये हुए कर्मों का सुख दु:ख, रूप फल का भोग किया जाता है, उसे प्रारब्ध कहते हैं।

इसमें स्पष्ट ही सुख-दु:ख प्राप्ति पूर्व किये गये कर्मों के अनुसार फल के रूप में वर्णित है। न्याय दर्शन प्र. अ. आ. एक के सूत्र के भाष्य में वात्स्यायन मुनि लिखते हैं-

'संसाधन सुखदु:खोपभोग फलम्' तथा अन्यत्र 'सुख दु:ख संवेदनम् फलम्।' इन वचनों के अनुसार सुख दु:ख की प्राप्ति फल है। यह फल वर्तमान या पूर्व जन्म के कर्मानुसार होता है। सांख्य दर्शन के अनुसार यह दु:ख की प्राप्ति आध्यात्मिक, आधि दैविक तथा आधि भौतिक रूप से प्राप्त कर्मानुसार फल के अन्तर्गत है। कुछ विद्वानों की मन्यता है-

'हमें अन्यों द्वारा जाने-अनजाने अन्यायपूर्वक भी सुख-दु:ख प्राप्त होता है। यह सुख-दु:ख हमारे पूर्वकृत कर्मों का ईश्वर प्रदत्त फल नहीं होता' आदि उनकी यह भी मान्यता है-

अन्यों द्वारा दिया सुख दु:ख भी ईश्वर प्रदत्त हो तो अन्यों का पुण्य अपुण्य, धर्म अधर्म कैसे माना जा सकता है? और तब कर्मफल व्यवस्था ही नहीं रह पायेगी।

उक्त विचारधारा महर्षि दयानन्द के निम्न प्रमाणों से विपरीत है। सत्यार्थ प्रकाश नवम् समुल्लास में-

1. देखो एक जीव विद्वान्, पुण्यात्मा, श्रीमान् राणी के गर्भ में आता और दूसरा महादरिद्र घसियारी के गर्भ में आता है। एक गर्भ से लेकर सर्वथा सुख और दूसरे को सब प्रकार दु:ख मिलता है। दूसरे का जन्म जंगल में होता है, स्नान के लिये जल भी नहीं मिलता। जब दूध पीना चाहता है तब दूध के बदले घूंसा, थपेड़ा आदि से पीटा जाता है। अत्यन्त आर्त स्वर से रोता है। कोई नहीं पूछता। इत्यादि जीवों को बिना पुण्य पाप के सुख दु:ख होने से परमेश्वर पर दोष आता है।

इस उदाहरण में प्रथम को नौकर चाकर द्वारा सुख तथा दूसरे को घूंसा थपेड़ा आदि से प्राप्त दु:ख को पुण्य पाप का फल कर्मानुसार ईश्वरीय व्यवस्था से प्राप्त वर्णित है।

2. सत्यार्थ प्रकाश द्वादश समुल्लास में-यदि ईश्वर फल प्रदाता न हो तो पाप के फल दु:ख को जीव अपनी इच्छा से कभी भी नहीं भोगेगा। वैसे ही ईश्वर के भुगाने से जीव पाप और पुण्य के फलों को भोगते हैं। अन्यथा कर्म संकर हो जायेंगे। अन्य के कर्म अन्य को भोगने पड़ेंगे।

इस प्रमाण से यह स्पष्ट होता है कि महर्षि कर्मफल कर्मानुसार ही ईश्वरीय व्यवस्था से मानते हैं।

3. एकादश समुल्लास में-पूर्वापर जन्म न मानने से कृतहानि और अकृताभ्यागम, नैर्घृण्य और वैषम्य दोष भी ईश्वर में आते हैं। दूसरा पूर्व जन्म के पाप पुण्यों के बिना सुख दु:ख की प्राप्ति इस जन्म में क्योंकर हो? जो पूर्व जन्म के पाप पुण्यानुसार न हो तो परमेश्वर अन्यायकारी और बिना भोग किये नाश के समान कर्म का फल हो जाये।

यहां पर कर्मानुसार शरीर प्राप्त हुआ किन्तु अन्य के द्वारा अंगभंगादि दु:ख प्राप्त हुआ। यह कृतहानि दोष, अकृताभ्यागम बिना कर्म के सुख दु:ख प्राप्ति अन्य के द्वारा प्राप्त हो तो सर्वज्ञ पर अकृताभ्यागम दोष होगा। इसी प्रकार अकारण ही अन्य के द्वारा प्राप्त दु:ख नैर्घृण्य, दयाहीनता या कठोरता का दोष दयालु ईश्वर पर तथा विषमता असमान व्यवहार करने के कारण ईश्वर पर दोष लगेगा। अत: यही सिद्धान्त उचित है कि पूर्वापर कर्मानुसार ही प्रत्येक को सुख दु:ख ईश्वर द्वारा प्राप्त होता है। 4. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के पुनर्जन्म विषय में महर्षि दयानन्द अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं-

बिना कारणेन कार्यं नैव भवतीति दर्शनात्। तथैव न्यायकारीश्वरोऽपि बिना पापपुण्याभ्यां न कस्मैचित् सुखं दु:खं च दातुं शक्नोति। संसारेनीचोच्च सुखि दु:ख दर्शनांत् विज्ञयते पूर्वजन्मकृते पापपुण्ये बभूवतुरिति। 5. सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास में-

कर्म और कर्म के फल का कर्ता भोक्ता जीव और कर्मों के फल को भोगाने वाला परमात्मा है। इस आधार पर महर्षि के विचारानुसार जिसे भी सुख दु:ख की प्राप्ति होती है, वह सब प्राप्तकर्ता के कर्मानुसार है। इसमें ईश्वर की न्यायव्य-वस्थानुसार प्राप्ति की प्रमुखता है। महर्षि दयानन्द अपनी लघु पुस्तिका 'वेद विरुद्ध मत खण्डनम्' में इसी तथ्य को इन शब्दों में व्यक्त करते हैं-

6. सर्वदोष निवृत्तिरिति-दोषा निवृता भूत्वा क्व गमिष्यन्ती-तिवाच्यम्। नष्टा भविष्यन्तीति ब्रूयुश्चेत् कदाचिन्नैव नरयेयु:। अन्यकृता पाप दोषा अन्यमनुष्यन्नैव गच्छन्ति किन्तु कर्तैव कृतं शुभाशुभ फलं भुङ्क्ते नान्य कश्चिदिति।

(दयानन्द लघु ग्रन्थ संग्रह, रामलाल कपूर, ट्रस्ट, पृ. 419)

स्वामी दयानन्द 'आर्याभिविनय' द्वितीय प्रकाश के सत्रहवें मन्त्र में, जो यजुर्वेद 5.32 का है-

7. प्रतक्वा शब्द का अर्थ इस प्रकार लिखते हैं-'नभोऽसि प्रतक्वा' सब के ज्ञाता, सत्यासत्यकारी जनों के कर्मां को सादय रखने वाले कि जिसने जैसा पाप व पुण्य किया हो उसको वैसा फल मिले। इसमें स्पष्ट लिखा है कि अन्य का पुण्य व पाप अन्य को कभी न मिले। इन स्पष्ट वचनों के रहते हुए हमारे सम्माननीय विद्वान् यह कैसे कहते हैं कि हमें अन्यों के द्वारा जाने अनजाने अन्यायपूर्वक भी सुख दु:ख प्राप्त होता है। यह सुख दु:ख हमारे पूर्वकृत कर्मों का ईश्वर प्रदत्त फल नहीं होता। विचारणीय यह है कि क्या यह अकारण सुख दु:ख अन्यों के द्वारा प्राप्त होता है। बिना कारण कार्य होता है ऐसी मान्यता किसी भी आर्ष शास्त्र की नहीं है।

8. सत्यार्थ प्रकाश के त्रयोदश समुल्लास की 73वीं समीक्षा में-जैसे कि दूसरे को नहीं प्राप्त हो सकता, वैसे ही किसी का किया हुआ पाप किसी के पास नहीं जाता। किन्तु जो करता है, वही भोगता है, यही ईश्वर का न्याय है। यदि दूसरे का किया पाप पुण्य दूसरे को प्राप्त हो अथवा न्यायाधीश स्वयं ले व कर्त्ताओं ही को यथायोग्य फल ईश्वर न दे तो अन्यायकारी हो जाये।

9. यजुर्वेद 2.28 के भावार्थ में-मनुष्येणेदं निश्चेतव्यं मयेदानीं यादृशं कर्म क्रियते तादृशमेवेश्वरव्यवस्थया फलं भुज्यते भोक्ष्यते च। न कि कश्चिदपि जीव: स्वकर्म विरुद्धं फलमधिकं न्यूनं वा प्राप्तुं शक्नोति।

इससे भी यही स्पष्ट होता है कि समस्त संसार का चक्र कर्मों के आधार पर चला रहा है। सुख के अनेक साधन होने पर किसी दूसरे के द्वारा किसी प्रकार का दु:ख प्राप्त हो रहा है तो यह भी कर्म फल के अन्तर्गत है। बिना कारण कार्य नहीं होता है। यह नियम सर्वत्र व्याप्त है। 10. सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में-जब दुष्ट कर्म करने वाले जीव ईश्वर की न्याय व्यवस्था से दु:ख रूप फल पाते हैं तब रोते हैं और इसी प्रकार ईश्वर उनको रुलाता है। 11. सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में महर्षि दयानन्द कितने स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं-देखो, जब कोई प्राणी मरता है, तब उसका जीव पाप पुण्य के वश होकर परमेश्वर की व्यवस्था से सुख दु:ख के फल भोगने के अर्थ जन्मान्तर धारण करता है। क्या इस अविनाशी परमेश्वर की व्यवस्था का कोई भी नाश कर सकता है।

आश्चर्य है महर्षि के इतने स्पष्ट विचार होते हुए भी यह कैसे स्वीकार करते हैं जाने अनजाने कोई भी व्यक्ति हमें सुख दु:ख पहुंचा सकता है। यह सुख दु:ख हमारे कर्म के अनुसार प्राप्त है, ऐसा नहीं है यह ईश्वर द्वारा प्रदत्त नहीं है। क्या ऐसा मानना ईश्वर की व्यवस्था का नाश नहीं है। क्या इसे अकृताभ्यागम नहीं कहेंगे।

12. उपदेश मञ्जरी के जन्म विषयक व्याख्यान में महर्षि कहते हैं- अर्थात् ईश्वर न्यायकारी है और जन्मान्तर के अपराधानुरूप जीवों को वह दण्ड देता है। अर्थात् जितना ही तीव्र पाप करता है, उतना ही उसे (जीव को) भोगना पड़ता है।

13. 'सत्य धर्म विचार' में भी महर्षि लिखते हैं-

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय

वीतराग तपस्वी-स्वामी स्वतन्त्रानन्द

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज वीतराग सन्यासी होते हुए भी आर्य समाज के कर्मठ सेनानी थे। जिन पुण्यात्माओं को जन्म देकर यह भारत भूमि धन्य हो गई है, उन पुण्यात्माओं में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज भी एक थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जनम विक्रम सम्वत् 1934 के पौष मास की पूर्णिमा को मोही ग्राम जिला लुधियाना में एक प्रतिष्ठित सिख जाट परिवार में हुआ था। बालक केहरसिंह का जन्म सन् 1877 ई. में उस समय हुआ जब महर्षि दयानन्द जी महाराज वेद ज्ञान की अमृत धारा को प्रवाहित करते हुए लुधियाना नगर पधारे। उस समय कौन जानता था कि यह बालक बड़ा होकर महर्षि दयानन्द का अनुयायी बनकर अपना जीवन अर्पण कर देगा। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जीवन त्याग, तप, सरलता और संयम का प्रतीक था। उनकी करनी और कथनी में भेद नहीं था। उनका व्यक्तिगत जीवन सामान्य व्यक्तियों के लिए ही नहीं अपितु त्यागी, तपस्वी महात्माओं के लिए भी अनुकरणीय जीवन था।

भारत भूमि को ऋषियों, मुनियों की धरती होने का गौरव प्राप्त है। हमारे देश में समय-समय पर अनेक ऋषियों, महापुरूषों तथा वीरों ने जन्म लिया। उन्होंने अपने धर्म तथा देश के लिए कार्य किया, अपना बलिदान दिया और इस संसार में अमर हो गए। उनके तप और त्याग के कारण आज भी हम उन्हें श्रद्धा से याद करते है। आर्य सन्यासियों में यदि किसी वीतराग, तपस्वी, परदु:खकातर, तुरीयाश्रमी को लौह पुरूष की संज्ञा दी जा सकती है तो इसके वास्तविक अधिकारी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज हैं।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म एक सिख परिवार में हुआ। लुधियाना जिले के मोही गांव में इनका जन्म हुआ। पंजाब भूमि को यह गौरव प्राप्त है कि यहां पर महर्षि दयानन्द के गुरू दण्डी स्वामी विरजानन्द ने जन्म लिया। स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाज पतराय, स्वामी दर्शनानन्द आदि इसी पंजाब की धरती पर पैदा हुए। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म संवत् १९३४ के पौष मास की पूर्णिमा को सरदार भगवान सिंह नामक एक सिख के घर हुआ। जिस समय बालक केहरसिंह का जन्म हुआ उस समय स्वामी दयानन्द जी महाराज वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए लुधियाना पधारे हुए थे। उस समय इस बात को कौन जानता था कि सिख घराने में पैदा हुआ यह बालक महर्षि दयानन्द की वाटिका को सींचेगा। उनका बचपन का नाम केहर सिंह था। बालक केहर सिंह की आरम्भिक शिक्षा ग्राम मोही में हुई। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की रूचि बचपन में ही आध्यात्मिक ग्रन्थों में थी। इसके लिए उन्होंने संस्कृत का अभ्यास किया। वे छोटी आयु में वेदान्त दर्शन का अध्ययन करते रहे। उस समय में प्रचलित कुरीतियों के कारण स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को बचपन में गृहस्थ के बन्धनों में बाँध दिया गया। किन्तु यह दैवी संयोग ही था कि उनकी पत्नी का देहांत हो गया। इससे पहले कि उन्हें दोबारा गृहस्थ के बन्धन में बाँधा जाता , वे वैराग्य पथ के पथिक बन गए और उन्होंने गृहत्याग कर दिया।

केहरसिंह के ननिहाल गांव लताला में उदासीन सम्प्रदाय के एक मठ में पं. विशनदास नामक आर्य विद्वान् रहते थे। इनके सम्पर्क में आने से केहरसिंह भी आर्य विचारधारा में दीक्षित हो गए। अब उन्होंने अध्ययन और सत्संग को ही जीवन का लक्ष्य बना लिया इसलिए वे इधर-उधर भ्रमण करते रहते थे। २३ वर्ष की आयु में केहरसिंह ने सन्यास की दीक्षा ले ली और प्राणपुरी नाम धारण किया। साधु प्राणपुरी में अब संस्कृत पढ़ने की अदम्य प्रेरणा जागृत हुई। उन्होंने अमृतसर में स्वामी स्वरूपदास से कुछ समय के लिए वेदान्त तथा न्यादर्शन पढ़े। उन दिनों स्वामी स्वतन्त्रानन्द अपने शरीर पर मात्र कौपीन ही धारण करते थे और पात्र के रूप में एक बाल्टी रखते थे। लोग उनको बाल्टी वाले साधु के नाम से पुकारने लगे। उनकी स्वतन्त्र प्रकृति के कारण लोग उन्हें स्वामी स्वतन्त्रानन्द कहने लगे और बाद में वे इसी नाम से प्रसिद्ध हो गए।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी प्रतिदिन नियम से योगाभ्यास करते थे और वेद का स्वाध्याय किया करते थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की जीवनचर्या निश्चित थी। उनमें यह एक विशेष गुण था कि चाहे कितने ही दिन क्यों न बीत जाए वे दोपहर का भोजन 12 बजे के बाद नहीं करते थे। रात्रि के समय 8 बजे के बाद दूध नहीं पीते थे। वे भोजन स्वाद के लिए नहीं, अपितु शरीरयात्रा के लिए करते थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी लगातार वेद प्रचार करते थे। न केवल व्याख्यानों के द्वारा, अपितु पारस्परिक बातचीत द्वारा भी। पंजाब, सिंध और बलोचिस्तान, कश्मीर और दिल्ली का कोई स्थान ऐसा नहीं था जहां उनके भाषण न हुए हों। इसके अतिरिक्त सारे भारत की पदयात्रा और प्रचार किया। इसके साथ ही मारीशस द्वीप, अफ्रीका, थाइलैण्ड़ आदि अनेक देशों में वैदिक धर्म का प्रचार किया।

राष्ट्र सेवा में भी स्वमी स्वतन्त्रानन्द जी अग्रगण्य थे। लार्ड हार्डिंग के ऊपर गोला फैंका गया तब भी उनकी जांच की गई थी। पंजाब में अंग्रेज गवर्नर पर भी गोली गोली चलाए जाने वाले लोगों के साथियों में उनका नाम लिया गया था। लोहारू में जब आर्य समाज के जलूस पर मुसलमानों से शस्त्रों सहित आक्रमण किया तब स्वामी जी सबसे आगे थे। मुसलमानों ने लाठी कुल्हाड़ी आदि हथियारों से स्वामी जी पर प्रहार किए, परन्तु स्वामी जी अड़िग रहे। इस अड़िग भाव को देखकर मुसलमान भाग गए। वहां के पुलिस अधिकारी ने अपनी गवाही में कहा था कि यदि स्वामी जी लाठी उठा लेते तो न जाने क्या हो जाता। स्वामी जी ने इतना ही कहा हम साधु हैं- तुमने रोटी नहीं दी सोटी दी हमारे लिए कोई अन्तर नहीं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी जितने बलवान थे उतने ही शान्त थे।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी जहां भी गए अपने पांवों के निशान छोड़ते गए। उन्होंने हैदराबाद सत्याग्रह का संचालन जिस योग्यता व कर्मठता से किया उसके कारण देश में तो क्या विदेश में भी उनकी धाक् जम गई। सर्वत्र उनकी योग्यता का गुणगान होने लगा। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने सब अवस्था को भांपकर तैयारी आरम्भ करदी थी। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी दूसरों की भावनाओं का हमेशा सम्मान किया किन्तु अपनी विचारधारा नहीं छोड़ी। अत: लोहारू में हुए हमले से सिर में तीन इंच गहरा घाव हुआ तो पैदल चलकर स्टेशन पहुंचे। सिलाई के समय क्लोरोफार्म नहीं लिया तथा पुन: शीघ्र लोहारू जा पहुंचे। परिणामस्वरूप नवाब को झुकना पड़ा। पंजाब के मालेरकोटला में तो आपका नाम सुनते ही मन्दिर के ताले खोल दिए गए। 1935 में स्वामी स्वतन्त्रानन्द के कारण ही लाहौर में बूचड़खाना नहीं खुल सका जिसे बाद में पठानकोट में लगाने की योजना बनी। इस पर एक मुसलमान ने लिखा था कि। अंग्रेज सरकार को यह समझ लेना चाहिए कि टक्कर किससे है? यह टक्कर उसी तेजस्वी, प्रतापी, वीर आर्य नेता से है जो अभी-अभी हैदराबाद रियासत को पाठ पढ़ाकर आया है। यह फकीर नहीं तेजस्वी पुरूष है जो कदम आगे धरकर पीछे हटाना नहीं जानता। सरकार बुद्धिमत्ता से कार्य ले नहीं तो पछताना पड़ेगा।

ऐसे वीर तेजस्वी, तपस्वी, त्यागी संत स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्मदिवस 2 जनवरी 2018 को आ रहा है। ऐसे पुण्यात्मा संत का जन्मदिवस मनाते हुए हम उनके जीवन से त्याग तथा कर्मठता के गुणों को ग्रहण करके अपने जीवन में धारण करने का प्रयास करें। स्वामी जी तप व त्याग की प्रतिमूर्ति थे। हम भी स्वामी स्वतन्त्रानन्द के जीवन से शिक्षा लेकर मानवता के पथ प्रदर्शक बनें और देश हित के कार्य करें तथा आर्य समाज को एक नई दिशा देने का प्रयत्न करें।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

अग्निहोत्र यज्ञ व इससे होने वाले लाभों पर विचार

ले.-मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001

वैदिक धर्मी आर्यों के पांच दैनिक कर्तव्य हैं जिन्हें ऋषि दयानन्द जी ने भी पंचमहायज्ञ नाम से स्वीकार किया है। उन्होंने पंचमहायज्ञविधि नाम से एक पुस्तक भी लिखी है। संस्कार विधि में इन यज्ञों का विधान किया गया है। स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश में सन्ध्या एवं देवयज्ञ अग्निहोत्र की चर्चा एवं इसके समर्थन में विज्ञान की दृष्टि से विचार प्रस्तुत किये हैं। हम यहां दैनिक देवयज्ञ की चर्चा कर रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि सभी परोपकार के कार्यों को यज्ञ कहा जाता है। जिन कार्यों से मनुष्य व प्राणीमात्र अथवा समाज को लाभ होता है वह कार्य यथा ईश्वर को जानकर सन्ध्या-उपासना करना एवं वातावरण को स्वच्छ रखते हुए समाजोत्थान के कार्यों में संलग्न होना, ऐसे सभी कार्य भी यज्ञ के अन्तर्गत आते हैं।

देवयज्ञ में यज्ञकुण्ड, यज्ञ समिधा, गोघृत व मिष्ट, सुगन्धित एवं औषधि आदि द्रव्यों से निर्मित पदार्थों वा हवन सामग्री का प्रयोग किया जाता है। घृत एवं हवन सामग्री को वेदमंत्रोच्चारण के साथ मन्त्र के अन्त में स्वाहा बोल कर यज्ञकुण्ड की अग्नि में आहुति देते हैं जिससे हम नासिका साधन से सुगन्ध का अनुभव करते हैं। इसका अर्थ यह होता है कि हमने घृत व हवन सामग्री की जो आहुति यज्ञकुण्ड में डाली है वह सूक्ष्म होकर वायुमण्डल में फैल गई है जिसका प्रभाव सुगन्ध के रूप में हमें अनुभव होता है। ऋषि दयानन्द जी ने कहा है कि यज्ञ करने से दुर्गन्ध का नाश होता है। यह प्रत्यक्ष अनुभव ज्ञान व अज्ञानी सभी मनुष्यों को होता है। सुगन्ध स्वास्थ्य के लिए हितकर होती है और दुर्गन्ध व प्रदूषित वायु स्वास्थ्य के लिए अहितकर होती है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि हमारे रोगों का नाश हो रहा है और हम स्वस्थ हो रहे हैं। स्वस्थ मनुष्य यह अनुभव करते हैं कि हम भावी जीवन में रोगों से लड़ने की शक्ति अपने शरीर के भीतर संग्रह कर रहे हैं जिससे हम स्वस्थ रहेंगे और रोगों से पीड़ित नहीं होंगे। ऋषि दयानन्द जी ने अपने साहित्य में यह भी लिखा है कि जब तक भारत में यज्ञों का प्रचार व प्रचलन था, यहां रोग नहीं होते थे या बहुत कम होते थे। आज भी यदि सभी लोग वा अधिक से अधिक लोग यज्ञ करना आरम्भ कर दें तो देश पूर्व काल के समान रोगरहित हो सकता है। ऋषि दयानन्द ने जो बातें यज्ञ विषयक कहीं हैं वह विचार करने पर सत्य एवं प्रामाणिक सिद्ध होती है। ऋषि दयानन्द के जीवन का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि वह केवल वेद और वैदिक साहित्य का ही पाण्डित्य नहीं रखते थे अपितु ज्ञान व विज्ञान में भी उनकी गहरी पहुंच थी। उन्होंने जो भी बात कही व लिखी है वह सभी अकाट्य युक्तियों, प्रमाणों से पुष्ट एवं विज्ञान की मान्यताओं व सिद्धान्तों मुख्यत: तर्क व अनुमान आदि से सिद्ध होती हैं।

अत: देश व समाज के बुद्धिजीवी वर्ग को यज्ञ पर अपना ध्यान केन्द्रित कर अनुसंधान, शोध व चिन्तन कर इसके सभी पक्षों को समाज के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहिये। यज्ञ पर जितना वैज्ञानिक कार्य होना था, किन्हीं कारणों से केन्द्र व राज्य सरकारों ने उसकी उपेक्षा की गई है। ऐसा वोट बैंक की नीति के कारण से होता है। सभी दल एक ही वर्ग को सन्तुष्ट करने व उनके ही हितों की बात करते हैं। इसी कारण वेद व यज्ञ की भी उपेक्षा की गई है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में देश विदेश के वैज्ञानिक यज्ञ विषयक अधिकाधिक अनुसंधान व शोध करेंगे जिससे समाज व संसार के लोग यज्ञ के लाभों से लाभान्वित हो सकेंगे।

वैदिक मान्यताओं के अनुसार अग्निहोत्र यज्ञ को प्रत्येक गृहस्थी के लिए प्रतिदिन प्रात: व सायं करना अनिवार्य है। इससे उनके स्वास्थ्य की रोगों से रक्षा होती है। ऐसा इस प्रकार होता है कि घरों में यज्ञ करने से यज्ञ की गर्मी से उसके सम्पर्क में आने वाली वायु गर्म होकर हल्की हो जाती है और ऊपर को गमन करती है। ऊपर की अधिक घनत्व की किंचित ठण्डी वायु नीचे आती है जो अग्निहोत्र वा हवन के सम्पर्क में आकर गर्म होकर ऊपर चली जाती है। इस प्रकार से ऊपर की वायु नीचे और नीचे की ऊपर आती जाती रहती है और इस प्रकार से पूरे कमरे व घर की वायु बाहर की तुलना में गर्म होने से हल्की होकर घर से बाहर चली जाती है और बाहर की शुद्ध वायु भीतर घर में प्रवेश करती जाती है। घर के भीतर की वायु श्वास-प्रश्वास व रसोईघर में भोजन पकाये जाने के कारण व घर की वायु के बाहर न जाने के कारण दूषित होकर वहां रहने वाले व्यक्तियों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती है। इस प्रकार से हवन वा अग्निहोत्र करने से घर के भीतर की अशुद्ध वायु शुद्ध हो जाती है। यह एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसे ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में प्रस्तुत कर यज्ञ के वैज्ञानिक लाभ से पाठकों को परिचित कराया है।

गीता में एक श्लोक में कहा गया है कि यज्ञ के धूम्र से बादल बनते हैं और बादलों से वर्षा होती है। वर्षा से खेतों में अन्न, फल, ओषधियां व वनस्पतियां उत्पन्न होती हैं। इन्हें भोजन के रूप में प्रयोग करने से मनुष्य के शरीर में अनेक पदार्थ बनते हैं जिनमें से एक तत्व वीर्य व आर्तव होता जिससे सन्तानों का जन्म होता है। इस मनुष्य जन्म से ही यह संसार सृष्टि के आरम्भ से अब तक चला आ रहा है। अत: यज्ञ से वर्षा का होना एक अतीव महत्वपूर्ण बात है। एक वेदमंत्र में ईश्वर ने बताया है कि जब जब यज्ञकर्ता चाहें तब तब बादल आयें और इच्छानुसार वर्षा करें। आर्य समाज में कीर्तिशेष पं. वीरसेन वेदश्रमी जी आदि विद्वान हुए हैं जिन्होंने सूखा पड़ने पर कुछ स्थानों पर यज्ञ से वर्षा कराई थी। स्वामी विद्यानन्द विदेह ने एक वृष्टि यज्ञ पद्धति नामक ग्रन्थ भी वर्षा न होने पर यज्ञ द्वारा वर्षा कराने पर लिखा है। यह देखा गया है कि जब वर्षा नहीं होती तो रोग बढ़ जाते हैं और वर्षा होने पर रोग कम होते हैं। बहुत से रोग वर्षा के होने पर ठीक भी हो जाते हैं। ऐसा लगता है कि यदि वायु वा बादलों में यज्ञ के घृत व हवन सामग्री का अंश अधिक होगा तो उससे स्वास्थ्य उत्तम होगा और अन्न की गुणवत्ता भी कहीं अधिक होगी।

यज्ञ करने से साध्य और असाध्य रोग दोनों प्रकार के रोग ठीक होते हैं। यज्ञ में एक मन्त्र 'अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च न:' आता है। इसमें कहा गया है कि प्राणों का प्राण परमात्मा हमारे जीवन की रक्षा करता है और हमें बल व अन्नादि प्राप्त कराता है। वह परमात्मा दुष्ट जीव-जन्तुओं से हमारी रक्षा भी करता है। हम जानते हैं कि रोगों का एक कारण क्रिमी वा सूक्ष्म कीटाणु होते हैं जिन्हें बैक्टिरिया कहते हैं। यज्ञ करने से वह नष्ट हो जाते हैं। हम यह भी अनुभव करते हैं यज्ञ के धूम का प्रभाव हमारे शरीर के बाहर तो होता ही है, इसके अतिरिक्त श्वास द्वारा हम जो प्राण भीतर लेते हैं उससे यज्ञ का प्रभाव और शुद्ध वायु हमारे भीतर पहुंचता है। इस प्रकार यज्ञ की अग्नि गोघृत व ओषधियुक्त सामग्री के सूक्ष्म कणों से हमारे शरीर की भीतर व बाहर से चिकित्सा करती हुई प्रतीत होती है। हम समझते हैं कि स्वस्थ व्यक्तियों को यज्ञ अवश्य करना चाहिये जिससे वायु व जल आदि में विद्यमान रोग के किटाणु हमारे शरीर पर दुष्प्रभाव उत्पन्न न कर सके। रोग हो जाने पर उनके निवारण में कठिनता होती है। पाठक इस विषय में स्वयं भी विचार कर सकते हैं। यज्ञ में हम जो वेदमंत्र बोलते हैं उसमें जीवन को शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक व आत्मिक सभी प्रकार के स्वास्थ्य की कामना की गई है। मन्त्रों में यह भी कहा गया है कि हम भौतिक पदार्थों से भी सम्पन्न व समृद्ध हों। आर्यसमाज के एक विद्वान श्री उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी तो एक प्रवचन ही इस बात का देते हैं कि जो यज्ञ करता है वह दरिद्र न होकर सुखी व समृद्ध होता है। हमने देहरादून के तपोवन आश्रम में दिये हुए उनके अनेक प्रवचनों को कई बार प्रस्तुत किया है जो पूर्णतया युक्ति संगत होते हैं। हमारा अपना मानना भी यही है कि यज्ञ से निर्धनता व अज्ञानता समाप्त होती है। मनुष्य सद्विचारों से पुष्ट होता है और जीवन में उन्नति को प्राप्त होता है। हम यह भी अनुभव करते हैं कि वेदमंत्रों में जो प्रार्थनायें की गई हैं वह सभी यज्ञ करने से पूर्ण होती है। भोपाल गैस काण्ड में जहां सहस्रों लोग गैसों के दुष्प्रभाव से मरे थे वहीं एक याज्ञिक परिवार इस कारण बच गया था कि वह प्रतिदिन यज्ञ करता था। उस यज्ञकर्ता का अपना परिवार ही उस विषैली गैस के दुष्प्रभाव से नहीं बचा था अपितु उसके पशुओं पर गैस का दुष्प्रभाव नहीं हुआ था। हम भी एक बार गम्भीर दुर्घटना होने पर पूर्णतया सुरक्षित बचे हैं। उस समय हमारे एक मित्र जो आर्यसमाजी नहीं थे, उन्होंने जब अन्यों से दुर्घटना की भीषणता को सुना तो हमें कहा था कि हम इसलिए बचे हैं कि हम यज्ञ करते व कराते थे। उनकी यह बात हमें उचित प्रतीत हुई थी और हमने सोचा कि उन्होंने यह बात शायद ईश्वर की प्रेरणा द्वारा ही न कही हो। ऐसे उदाहरण यज्ञ करने वाले सभी मनुष्यों के जीवन में मिल सकते हैं।

हमारे एक मित्र व उनकी पत्नी अतीत में कुष्ट रोगी रहे हैं। उन्होंने अपने परिवार की एक लड़की का पालन किया है। आज वह बैंक में अधिकारी है। उनकी एक छोटे से कमरे की कुटिया में हमारे देश के

(शेष पृष्ठ 7 पर)

मेरे परम मित्र : आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य जी

ले०-महात्मा चैतन्यमुनि महादेव, तहसील सुन्दरनगर, मण्डी (हि०प्र०)

27 सितम्बर, 1949 के दिन सम्पन्न सोनी परिवार में बिकानेर राजस्थान में माता श्रीमती पार्वतीदेवी और पिता श्री द्वारिकादासजी के यहां एक बालक ने जन्म लिया। बालक बचपन से ही अपने पूर्वजन्म के संस्कारों के कारण इतना वैरागी वृत्ति का था कि जैन कॉलेज से एम कॉम करने के बाद अचानक एक दिन घर से निकल पड़ा। यही बालक आगे चलकर आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य के नाम से यशस्वी हुआ। यह एक अच्छी बात थी कि अपने शिक्षाकाल में ही उसका सम्पर्क एक आर्य विचारधारा के सज्जन पण्डित ठाकुर प्रसाद आर्य जी से हो चुका था। आर्यजगत् की विभूति योगनिष्ठ स्वामी सत्यपति जी महाराज से सम्पर्क होना इनके जीवन की सर्वोत्तम उपलब्धि है। उन्हीं की प्रेरणा से इन्होंने गुरूकुल कालवा के आचार्य बलदेव जी से व्याकरण महाभाष्य का अध्ययन किया। गुरूकुल कांगड़ी के उप कुलपति प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार से निरूक्त पढ़ा तथा लगभग 1986 में स्वामी सत्यपति जी महाराज से विधिवत् दर्शनों का अध्ययन किया। स्वयं दर्शनों का अध्ययन करने के बाद इन्होंने रोजड़ में ही दर्शन योग महाविद्यालय में दर्शनों का ज्ञान देकर अनेक सुयोग्य आचार्य समाज को दिए....

कालान्तर में जब वानप्रस्थ साधक आश्रम की परिकल्पना को साकारता देने का अवसर आया जो आचार्य जी ने अपनी पूरी शक्ति और सामर्थ्य से इस आश्रम के लिए स्वयं को आत्मना समर्पित कर दिया और भव्य आश्रम का निर्माण किया। आज साधक आश्रम का जो भी स्वरूप हम देखते हैं इसके पीछे आचार्य जी का अथक परिश्रम और प्रतिभा ही है.... जहां उन्होंने दर्शन महाविद्यालय के माध्यम से संसार को सुयोग्य आचार्य दिए वहीं वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार के अद्भुत कार्य किए। सैकड़ों ही योगशिविरों का आयोजन किया। साहित्य प्रकाशन की दिशा में भी उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया है जिसमें गुजराती भाषा में अनेक पुस्तकें तथा कुछ वेदभाष्य भी उल्लेखनीय है.... योग और आध्यात्म विषयों पर अनेकश: पुस्तकें प्रकाशित कीं। सैकड़ों फोलडर, चार्ट, कलैण्डर, पत्रक आदि छपवाकर नि:शुल्क वितरित किए। योगेश्वर श्रीकृष्ण और मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम जी के कलैण्डर छपवाकर तथा प्राचीन ऋषि-मुनियों के चित्र एवं परिचय खोजकर और छपवाकर इन महापुरूषों की सही-सही पहचान प्रचलित कराई। अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण करके उसके माध्यम से यज्ञ का प्रशिक्षण देकर सैकड़ों ही लोगों को प्रतिदिन यज्ञ करने के लिए प्रेरित किया, अनेक नगरों में यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए। युवाओं के व्यक्तित्व निर्माण शिविर आयोजित किए। इसके अतिरिक्त वैदिक आध्यात्मिक न्यास तथा विश्व कल्याण धर्मार्थ न्यास द्वारा भी अनकेश: सार्थक कार्य किए। विचार टी. वी. को सक्रियता देना भी इनका एक महत्वपूर्ण कार्य है। लगभग अट्ठारह बार इन्होंने विदेश में भी प्रचार किया.....

हमसे उनका सम्पर्क लगभग 1980-81 से रहा जब वे गृह त्याग कर आए थे। उस समय के तथा बाद के भी अनेकों ही संस्मरण हैं जो हमारे व्यक्तिगत अधिक हैं। उनमें से कुछ का कहीं अन्यत्र या अपनी आत्मकथा में लिखने का प्रयास करूंगा। अन्तिम दिनों तक हमारे परिवार के साथ उनकी वैसी ही आत्मीयता रही.... सत्यप्रियायतिजी में वे अपनी मां की छवि देखा करते थे.... वे सभी के साथ मुझे अपना विश्वसनीय, अभिन्न एवं परम मित्र कहा करते थे.... 1983 से लेकर उनके साथ निरन्तर पत्र-व्यवहार भी होता रहता था। वे पत्र आज भी मेरी फाईल में हमारी आत्मीयता की थाती है.... वे जो भी कार्य करते थे या करना चाहते थे मुझसे विस्तार के साथ चर्चा करते थे। अपने हर अच्छे कार्य व उनमें आए संघर्षों की मुझसे खुलकर चर्चा करते थे। यह उनका बड़प्पन ही था कि मुझे वे अपना भगवान कहा करते थे.... मेरी सम्मति को अक्षरश: मानते थे.... जब वे हमारे यहां रहे थे तो हमारे पैतृक गांव भी गए थे। उन दिनों हम आश्रम के लिए कोई उपयुक्त स्थान देखना चाहते थे आचार्य जी, वैद्य हंसराज जी और मैं एक साथ ही कार्य करना चाहते थे। हालांकि अन्तिम दिनों तक उनका हमारे परिवार के साथ अत्यधिक स्नेहिल सम्बन्ध बना रहा मगर उन दिनों संभवत: उनकी वृत्ति में कुछ व्यवधान पैदा हुआ होगा अत: वे अपने दिनांक 24 अगस्त, 1983 के पत्र में लिखते हैं-'.... विगत डेढ़-दो वर्षों में पहली बार किसी परिवार में वास किया और घर जैसी स्थिति बन गई, विशेषकर बहिनजी को देखकर अपनी माता की। अब भी जब आपकी स्मृति, किसी कार्यवशात् आती है तो सत्यप्रिया जी को तो याद करते ही घर की माता आंखों के आगे उपस्थित हो जाती हैं। संभव है भविष्य में आपके घर न आऊँ...।' इसी पत्र में उन्होंने रिवाल्सर के आस-पास जो स्थान हमने आश्रम के लिए देखे थे, उनके बारे में भी लिखा है कि आप स्वयं चयन कर लें मगर वहां तक गाड़ी जाती हो... आदि....

कुछ पत्रों में सुन्दरनगर में शिविर आदि लगाने के बारे में चर्चा की गई है.... कालान्तर में हमने पूज्यपाद स्वामी जी महाराज के शिविर लगाए भी थे दिनांक 1-2-1987 के पत्र में उन्होंने षडदर्शन एवं योग प्रशिक्षण शिविर के सम्बन्ध में विस्तृत व्यौरा दिया था तथा क्योंकि हमारी अपने तीनों ही बच्चों को ब्रह्मचारी रखकर वैदिक धर्म का विद्वान् बनाने की कामना थी अत: इस पत्र में उन्होंने उसी सम्बन्ध में चर्चा की थी। इधर हम, विशेषत: सत्यप्रिया जी तो पहले ही तीनों बेटों को ब्रह्मचारियों के रूप में वैदिक विद्वान् बनाने का संकल्प लिए हुए थे अत: हमने बड़े बेटे अखिलेश भारतीय जी के बारे में उनसे चर्चा की.... वि०सम्वत् 2045 के लिखे पत्र में उन्होंने विस्तार से बताया कि श्री अखिलेश जी को अलग से संस्कृत आदि का प्रशिक्षण देकर बाद में प्रवेश दिलाया जाएेगा.... उसे क्या-क्या सामान आदि लाना है इस सम्बन्ध में भी दिशा निर्देश था। दिनांक 8-4-87 को पुन: प्रेरणात्मक एक लम्बा पत्र आया तथा उसमें बताया गया था कि यहां रोजड़ में एक योजना बन रही है जिसमें तीन वर्ष का एक कार्यक्रम बनाया जाएेगा। इस काल में 6 दर्शन तथा वैदिक सिन्द्धान्तों के साथ-साथ उच्चस्तर का योगाभ्यास का भी प्रशिक्षण दिया जाएेगा.... 10-10-88 को मैनें स्वामी सत्यपति जी को पत्र लिखा जिसमें तीनों बच्चों को वैदिक विद्वान् बनाने के बारे में लिखा तथा वर्तमान में बड़े बेटे अखिलेश के लिए जो उस समय बी. एस. सी. में पढ़ रहा था, प्रवेश हेतु प्रार्थना की.... हमें जब स्वीकृति मिल गई तो हमें अत्यधिक प्रसन्नता हुई तथा 25-10-88 को हमने एक पत्र लिखा जिसमें प्रिय अखिलेश को प्रवेश की स्वीकृति पर प्रसन्नता व्यक्त की गई थी। साथ ही मैनें लिखा कि हमने अखिलेश जी के लिए समस्त सामानादि लेकर सारी तैयारियां कर ली हैं तथा 13 या 20 नवम्बर को एक विशेष आयोजन करके अखिलेश भारतीय को स्वामी जी महाराज जी के साथ ही रोजड़ भेज देंगे.... स्वामी जी की अस्वस्थता के कारण उनका समय हमें नहीं मिला। स्वामी जी का पत्र आया कि जब तक मैं स्वस्थ न हो जाऊँ आप बेटे को न भेजें.... बाद में अखिलेश जी भयंकर रूप से बीमार हो गए थे....

24 जून, 1992 को लिखे पत्र में उन्होंने लिखा-'आपकी सरलता, निष्कपटता, सेवा भाव तथा अन्य अनेक धार्मिक प्रवृत्तियों के कारण मेरी आप तथा आपके परिवार के प्रति विशेष श्रद्धा रही। मैं एक बात आपसे पूछना चाहता हूँ आशा है आप परमेश्वर को सर्वज्ञ, न्यायकारी मानकर सत्य ही उत्तर देंगे। क्या 'हिमालय की गोद में' नामक पुस्तिका आपने लिखी है? मुझे यह पुस्तिका कल ही पढ़ने को मिली। 'असल में वह पुस्तक एक व्यक्ति ने लिखी थी और लेखक के रूप में मेरा नाम छाप दिया था जबकि मैनें वह पुस्तक नहीं लिखी थी.... बल्कि तब तक देखी भी नहीं थी। पुस्तक में आचार्य जी के बारे में कुछ अनर्गल चर्चा भी थी। मैंने उत्तर दे दिया कि मैनें कोई ऐसी पुस्तक नहीं लिखी है बल्कि देखी तक भी नहीं है..... उनका 11-7-92 को पत्र आया जिसमें लिखा था-'आपने सत्य ही का प्रतिपादन किया, ऐसा जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। यदि आप असत्य का अंगीकार करते तो आपकी आत्मा मर जाती, आप आत्मघाती बन जाते, जीवन भर विश्वास नष्ट हो जाता, बहुत उत्तम किया। ईश्वर आपको परमशान्ति, साहस, बल, धैर्य, ज्ञानविज्ञान व दिव्य आनन्द प्रदान करें, यही मेरी प्रार्थना है, अस्तु....।' इसी पत्र में उन्होंने उस व्यक्ति के गिरते स्तर के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा है, जिसने यह पुस्तक लिखी व छपवाई थी। दिनांक 30-8-1999 के पत्र में स्वामी सत्यपति जी का 21 नवम्बर को 51 लाख रूपए से सार्वजनिक अभिनन्दन के बारे में लिखा और कुछ कूपन भी भेजे मगर साथ ही यह भी लिखा गया था कि किसी से भी आग्रहपूर्वक धन नहीं मांगना है बल्कि अपनी योजना बतानी है और जितना स्वेच्छा से कोई धन दे उतना ही लेना है....

जब वे हमारे यहां से आ गए थे उसके बाद हम लगभग 20 वर्ष के बाद उनसे रोजड़ में आकर मिले थे.... वह मिलन भी वास्तव में ही

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पृष्ठ 2 का शेष-कर्मफल सिद्धान्त...

और धनाढ्य, कंगाल, सुखी, दु:खी अनेक प्रकार के ऊंच नीच देखने से विदित होता है कि कर्मों का फल है।

14. यजुर्वेद 2.28 मन्त्र के भावार्थ में महर्षि लिखते हैं-

मनुष्य को यही निश्चय करना चाहिये कि मैं अब जैसा कर्म करता हूं वैसा ही परमेश्वर की व्यवस्था से फल भोगता हूं और भोगूंगा। सब प्राणी अपने कर्म से विरुद्ध फल को कभी नहीं प्राप्त होते। इससे सुख भोगने के लिये धर्मयुक्त कर्म ही करना चाहिये कि जिससे कभी दु:ख नहीं हो।

15. सत्यार्थ प्रकाश के त्रयोदश समुल्लास की 44वीं समीक्षा में महर्षि अन्य का कर्मफल अन्य को प्राप्त हो, इसे स्वीकार नहीं करते-

भला यह किस घर का न्याय है कि जो पिता के अपराध से चार पीढ़ी तक दण्ड देना अच्छा समझना। बिना अपराध किसी को दण्ड़ देना अन्यायकारी की बात है।

16. शास्त्रार्थ मेला चांदपुर में-

और एक आदम ने पाप किया तो उसकी सन्तान पापी हो गई यह सर्वथा असंभव और मिथ्या है। जो पाप करता है वही दु:ख पाता है। दूसरा कोई नहीं पा सकता।

17. वैशेषिक दर्शन 6.1.5 के अनुसार-

'आत्मान्तरगुणानामात्मान्तरेऽकारणत्वात्'।

एक जीवात्मा के लिये गुणरूप शुभाशुभ कर्मों को दूसरे जीवात्मा को फल देने में कारण नहीं माना जा सकता क्योंकि जीवात्मा अपने किये पुण्यापुण्य अथवा धर्माधर्म का फल स्वयं भोगता है। मीमांसा दर्शन 6.2.8 का सूत्र है-'अन्यार्थे नाभिसम्बन्ध' अन्य जीवात्मा के किये कर्मों का फल अन्य जीवात्मा को नहीं प्राप्त कर सकता। निश्चय से कर्त्ता को उसका फल मिलता है, यह ईश्वरीय नियम अटल है।

यह सर्वविदित है कि मतान्ध लोगों ने अनेक यातनाएं देकर ईसा मसीह को प्राण दण्ड़ दिया। सत्यार्थ प्रकाश त्रयोदश समुल्लास की 65वीं समीक्षा में महर्षि लिखते हैं-

18. .... सो ईसा ने न अपने माता पिता की सेवा की और न दूसरों को भी माता पिता की सेवा से छुड़ाए इसी अपराध से चिरंजीवी न रहा। ईशा ने दूसरों को भी माता पिता की सेवा से छुड़ाया इसी कारण दण्ड़ मिला। यह अकारण नहीं है।

19. इसी समुल्लास की 73वीं समीक्षा में-

.... वैसे ही किसी का किया हुआ पाप किसी के पास नहीं जाता किन्तु जो करता है, वही भोगता है। यही ईश्वर का न्याय है। यदि दूसरे का किया पाप पुण्य दूसरे को प्राप्त हो अथवा न्यायधीश स्वयं ले ले व कर्त्ताओं ही को यथायोग्य फल ईश्वर न दे तो वह अन्यायकारी हो जाये।

20. स्वामी जी की उक्त मान्यता 'भ्रान्ति निवारण' पुस्तक की भूमिका में स्पष्ट है-

जो मैं संसार ही का भय करता और सर्वज्ञ परमात्मा का कुछ भी नहीं कि जिसके अधीन मनुष्य के जीवन मृत्यु और सुख दु:ख हैं तो मैं भी ऐसे ही अनर्थक वाद विवाद में मन देता।

21. मेला चांदपुर शास्त्रार्थ का यह वचन ध्यातव्य है-

.....सो जब कि ईश्वर के पवित्र बनाये आदम को शैतान ने बिगाड़ दिया और ईश्वर के राज्य में विघ्न करके ईश्वर की व्यवस्था को तोड़ डाला, तो इससे ईश्वर शक्तिमान नहीं रह सकता। .... और एक आदम ने पाप किया, तो उसकी सारी सन्तान पापी हो गई, यह सर्वथा असम्भव और मिथ्या है। जो पाप करता है, वही दु:ख पाता है, दूसरा कोई नहीं पा सकता। और भी-'जो बिना पाप पुण्य देखे जिसको चाहे दु:ख दे ओर जिसको चाहे सुख, तो ईश्वर में अन्याय आदि प्रमाद लगता है।'

विचारणीय तथ्य यह है कि कोई अल्पज्ञ मनुष्य जो किसी को अपनी स्वेच्छाचारिता से यदि सुख दु:खादि देता है और जिसको यह प्राप्त होता है तो प्राप्तव्य के प्रारब्धानुसार अर्थात् संचित कर्मानुसार ही ईश्वरीय व्यवस्था से प्राप्त होता है। लेख में दिये गये प्रमाणानुसार यही वैदिक सिद्धान्त है।

एक बात यह समझने योग्य है कि ईश्वरीय व्यवस्था में कर्मफल निश्चित होता है, साधन निश्चित नहीं होते। जब रेलगाड़ी, हवाई जहाज, आवागमन के अन्य अनेक साधन नहीं थे तब भी कर्मफल व्यवस्था लागू था। अत: कर्म फल व्यवस्था में साधन को निश्चित नहीं माना जा सकता।

एक विद्वान् ने यह कहा कि जिसने किसी को दु:ख दिया है तो उसे शासन की ओर से उसी प्रकार पुरस्कार देना चाहिये जैसा कि जल्लाद को मिलता है। इस चिन्तन को क्या कहा जाये। जल्लाद शासकों द्वारा नियुक्त होता है। उसके अतिरिक्त कोई मृत्युदण्ड प्राप्त को गोली से उड़ा दे तो राजकीय नियमानुसार वह अपराधी इसलिये है कि वह शासक के द्वारा नियुक्त नहीं है। इसी प्रकार कर्मफल ईश्वरीय व्यवस्था में निश्चित है, कैसे प्राप्त होगा यह निश्चित नहीं है। व्यक्ति पाप पुण्य का पात्र कर्म स्वातन्त्र्य के कारण है। वह शुभ अशुभ कर्म करने में ईश्वरीय व्यवस्था में पूर्ण स्वतन्त्र है। शुभ कर्म सुखदायी तथा अशुभ कर्म दु:खदायी होते हैं।

स्वामी दयानन्द 'विनाशकाले विपरीत बुद्धि' स्वीकार करते हैं तथा अभाग्योदय, भाग्य आदि शब्दों का प्रयोग करके स्पष्ट ही सुख दु:ख प्राप्ति कर्मानुसार स्वीकार करते हैं।

आजकल समस्त संसार में ही कर्मफल सिद्धान्त विषयक अनेक भ्रान्त, बुद्धिहीन, तर्क से परे, असत्य से युक्त, अन्धविश्वास से पूर्ण विचारधाराएं प्रचलित हैं। पूजा अर्चना या पाठ मात्र करने से, कीर्तन करने से, गायत्री मन्त्र या अन्य किसी के द्वारा बतलाये गये मन्त्र जाप मात्र से, नदी विशेष में स्नान करने से या तथाकथित स्तोत्र पाठ करने से, तीर्थ भ्रमण से, स्थान विशेष या व्यक्ति विशेष की परिक्रमा करने से, स्थान विशेष में मरने से, नदी विशेष में अस्थियां प्रवाहित करने से, व्यक्ति विशेष या गुरु विशेष में विश्वास करने से, ब्राह्मणों को भोजन खिलाने से, किसी विशेष अनुष्ठान के सम्पन्न कराने मात्र से, पारायण यज्ञादि करने से या यज्ञ में मात्र आहुति देने से, मूर्ति पूजा करने मात्र से, कब्र पर या मजार विशेष में चादर चढ़ाने मात्र से, आदि से या अन्य किसी कार्य से किये गये दुष्कर्मों के फल से बच जायेंगे, यह धारणा सर्वथा भ्रान्त है। किसी व्रत विशेष में अन्नादि न ग्रहण करने से किसी की आयु बढ़ जाती है, जीवन सुरक्षित रहता है आदि धारणाएं सर्वथा भ्रान्त हैं एवं दर्शनादि शास्त्रों से विरुद्ध हैं। सत्य तो यह है-

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।

नाभुक्तं क्षीयते कर्म जन्मकोटि-शतैरपि।।

स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर का 58 वां गायत्री महायज्ञ

आप को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि स्त्री आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर में दु:ख निवारक सुखवर्षक पवित्र गायत्री महायज्ञ दिनांक 14 जनवरी 2018 दिन बुधवार से 13 फरवरी 2018 तक लगातार एक मास बड़ी श्रद्धा व उत्साह से आयोजित किया जा रहा है जिसकी पूर्णाहुति 13 फरवरी 2018 को होगी। कार्यक्रम का समय दोपहर 2:30 से 4:30 बजे तक रहेगा। इस अवसर पर स्वामी विश्वानन्द जी-मथुरा, श्री सुरेश कुमार जी शास्त्री जालन्धर, आचार्य राजू जी वैज्ञानिक (दिल्ली) तथा महात्मा चैतन्यमुनि जी (सुन्दर नगर) को आमन्त्रित किया गया है। विशेष पूर्णाहुति समारोह दिनांक 13 फरवरी 2018 को होगा। यज्ञ के ब्रह्मा पं. सत्य प्रकाश शास्त्री एवं पं. बुद्धदेव वेदालंकार जी होंगे। आप सभी सपरिवार इष्ट मित्रों सहित इस कार्यक्रम में सादर आमन्त्रित हैं।

-सुशीला भगत प्रधाना स्त्री आर्य मॉडल टॉऊन जालन्धर

पृष्ठ 8 का शेष-शिक्षा का प्रसार...

भूमिका में बच्चों के आगे नाचते हुये बच्चों ने दादी अम्मा, दादी अम्मा मान जाओ पेश कर के दादी को मनाने और नानी को रिझाने की कलाकारी दिखाई तो सभी माता-पिता अपने बच्चों की अठखेलियां देखकर भावुक हो उठे। वहीं अलग अलग राज्यों के लोक नृत्यों ने मेहमानों को नाचने पर मजबूर कर दिया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री मनप्रीत बादल वित्त मंत्री पंजाब ने आना था परन्तु अपनी सेहत खराब होने की वजह से वह इस कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सके। कार्यक्रम का शुभारम्भ एस.डी.एम. साक्षी सिन्हा और श्री प्रेम भारद्वाज महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कर-कमलों द्वारा ज्योति प्रज्जवलित करने से हुआ। स्कूल के प्रधान श्री पी.डी.गोयल ने आए हुये मेहमानों का स्वागत करते हुये उनका जीवन परिचय करवाया। प्रधानाचार्य श्री विपिन कुमार जी ने स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ कर सुनाई। कार्यक्रम के अन्त में स्कूल के सचिव श्री अश्विनी मोंगा जी ने मेहमानों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर प्रबन्ध समिति के उप प्रधान श्री रमेश कुमार गर्ग, स्वामी सूर्यदेव जी, श्री चिरंजी लाल जी गर्ग, प्रो.एन.के गोसाईं, श्री गौरी शंकर, सह सचिव श्री सुरिन्द्र कुमार गर्ग, श्री पवन मानी एवं अन्य सदस्यों की उपस्थिति रही। मंच का संचालन परविन्द्र कौर जी ने किया।

पृष्ठ 4 का शेष-अग्निहोत्र यज्ञ व...

पूर्व राष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरी आ चुके हैं। अन्य अनेक गणमान्य व्यक्ति, आ चुके हैं। आपका यश पूरी संस्था में छाया हुआ है। सभी उनकी विद्वता से प्रभावित हैं। हमें तो इसके पीछे उनकी ईशभक्ति, वेदाध्ययन, वेदप्रेम और आर्यसमाज के प्रति अनुराग तथा यज्ञ का प्रभाव ही अनुभव होता है। यहां हम यह भी जोड़ना चाहते हैं कि यदि कुछ भाई दैनिक यज्ञ अग्निहोत्र नहीं कर पाते हैं तो वह यज्ञ के सभी मन्त्रों का मौन व शाब्दिक उच्चारण कर मानस यज्ञ ही कर लिया करें। इतने मात्र से भी उन्हें कुछ लाभ अवश्य होगा। यज्ञ करने से आध्यात्मिक लाभ भी होते हैं। यज्ञ करने से यज्ञकर्ता दैवीय गुणों से युक्त होकर देव हो जाता है। इससे काम, क्रोध, लोभ आदि नियंत्रित हो जाते हैं। लेख का और विस्तार न कर हम पाठकों से निवेदन करते हैं कि वह यज्ञ अवश्य करें। इससे उन्हें हानि तो कोई नहीं होगी, भावी जीवन में लाभ अवश्य ही होंगे जिन्हें उनकी आत्मा स्वीकार करेगी। यज्ञ करने से वह स्वस्थ रहेंगे और उनकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी होगी, ऐसा हमारा अनुभव है।

पृष्ठ 8 का शेष-51 कुंडीय सामवेद...

श्रद्धानंद बलिदान दिवस मनाया गया। आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर के रजत जयंती समारोह के अन्तिम दिन सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर 51 कुंडीय यज्ञ में मुख्य यजमान श्रीमती एवं श्री सुरिन्द्र कालिया डी.आई.जी., श्री स्वतंत्र कुमार मुरगई उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री विपिन शर्मा मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, सुशील कालिया पार्षद, सुभाष आर्य, नरेन्द्र कुमार सूद कपूरथला, ओम मल्होत्रा, पीयूष ढींगरा, मयंक बजाज, राकेश भार्गव, डा.जीवन दस्सन, राज कुमार मागो सहित 108 दम्पतियों ने मिल कर यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियों द्वारा पवित्र पावन वेद मंत्रोच्चारण से वातावरण मंगलमय बना दिया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य ज्ञान प्रकाश वैदिक ने वेदों के आधार पर राष्ट्र भक्ति के स्वरूप का वर्णन करते हुये कहा कि वेद ही विश्व की समस्याओं का समाधान कर सकता है।

आर्य समाज मंदिर की प्रसिद्ध गायिका सोनू भारती ने यज्ञ प्रार्थना एवं भजनों से भक्तिमय वातावरण तैयार किया। आर्य समाज के प्रसिद्धभजनोपदेशक श्री जगत वर्मा ने देशभक्ति व ईश्वर भक्ति भजन सुना कर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आरम्भ हुआ जिसके मुख्य अतिथि श्री सुदर्शन शर्मा जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब थे। सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमती सुशीला भगत ने कुशलता के साथ की और बताया कि आर्य समाज और महर्षि दयानन्द का इस राष्ट्र के उपर बहुत बड़ा योगदान है। वहीं आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक जगत वर्मा ने राष्ट्रभक्ति से युक्त भजनों को सुनाते हुये नौजवानों को प्रेरित किया और बताया कि राष्ट्र के लिये कितनी बड़ी कुर्बानी हमारे देश के वीर जवानों ने दी जिसको भुलाया नहीं जा सकता। वहीं स्वामी सूर्यदेव जी ने राष्ट्र रक्षा के संदर्भ में आर्य समाज के योगदान का वर्णन करते हुये कहा कि आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो राष्ट्र रक्षा की बात करती है और इसे समय समय पर प्रोत्साहित करती है। वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री प्रेम भारद्वाज जी महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा उप प्रधान, श्री अश्विनी डोगरा जी, श्रीमती सरला भारद्वाज आदि लोगों ने राष्ट्र रक्षा के संदर्भ में उपस्थित श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। आर्य समाज की ओर से आर्य विभूषण से चौधरी ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री प्रियतम देव जी मोगा, श्रीमती सुशीला भगत जी, श्री शादी लाल महेन्द्रु बंगा, कैलाशवंती अरोडा जी को सम्मानित किया गया। आर्य समाज के मंत्री हर्ष लखनपाल जी ने बहुत ही सुन्दर ढंग से मंच का संचालन किया। ललित मित्तल, नीना मित्तल, अमित शर्मा, हितेष स्याल, अंकुल गोयल, साक्षी गोयल, केदारनाथ शर्मा, मीनू शर्मा, सन्या आर्य, इन्दु आर्य, धर्मेन्द्र कुमार, ज्योति कुमारी, मीनू शर्मा, अनिल शर्मा, राजेश पंचाल, दीपा पंचाल, रेखा शर्मा, अशोक शर्मा, रसिक वर्मा, नेहा वर्मा, राजेश वर्मा, अनिल अरोडा, रजनी अरोडा, अंजुला भास्कर, रजत दुग्गल, पूनम दुग्गल, हरविन्द्र सिंह, असीम मिश्रा, गीतांजलि मिश्रा, विकास धीर, अर्चना मिश्रा, रिया शर्मा, विनोद कुमार, ओम प्रकाश मेहता, पूनम मेहता, दीपक सूरी, बबीता सूरी, नवीन कुमार चावला, अदिति चावला, विजय कुमार चावला, दिलीप कुमार, रक्षा कुमारी, कुलदीप सिंह, बिहारी लाल ठाकुर, निशांत कालिया, दीपाली कालिया, राजेश चोपडा, सोनिया चोपड़ा, डा. जीवन कुमार दस्सन, रंजनी सचदेव, राजीव शर्मा, प्रवीण चौहान, मंजू शर्मा, पवन शर्मा, बिशन लाल, महेन्द्र लाल ठुकराल, डा. एस.वाजपेयी, विदुषी वाजपेयी, ईश्वर चन्द्र रामपाल, भूपेन्द्र उपाध्याय, चौधरी हरीचंद, नालिनी उपाध्याय, इन्दु आर्य, अमन आर्य, सुभाष आर्य, सुदर्शन आर्य,संदीप अरोडा, गीतिका अरोडा, सुरेन्द्र अरोडा, कमलेश घई, मोहन लाल, मनु आर्य, चमन लाल, वीना रानी, नरेन्द्र कुमार सूद, कपूर चंद गर्ग, रविन्द्र आर्य, अमन आर्य, गौरव आर्य, कनु आर्य, स्नेह लता कालिया, अरविन्द घई, रश्मि घई, सीमा मेहता, सीमा अनमोल, नवीन मेहता आदि शामिल थे।

पृष्ठ 5 का शेष-मेरे परम मित्र :...

अद्‌भुत था.... वहां के ब्रह्मचारियों ने बताया कि वे हमसे कहते थे कि आज मेरे परम मित्र आ रहे हैं तथा स्वयं बार-बार उस कुटिया का निरीक्षण करते थे जिसमें हमें ठहराना था। उसके बाद हम सपरिवार भी उनसे तथा पूज्यपाद स्वामी जी महाराज से मिलने जाते रहे और अजमेर, दिल्ली, मोगा तथा लुधियाना आदि में कार्यक्रमों में तथा अन्यत्र भी मिलना होता रहता था.... ।रोजड़ और अजमेर में हुई गोष्ठियों में भी मिलना होता था और घंटों बहुत ही अन्तरंग बातें होती रहती थीं। अप्रैल, 2015 में अन्तिम बार वे हमारे यहां बहिन जयाबेन आर्या वानप्रस्था तथा अपने कुछ अन्य श्रद्धालुओं के साथ सुन्दरनगर आए थे। समूचा परिवार जैसे प्रसन्नता से झूम सा उठा था और स्वयं आचार्य जी तो बस.... इसी वर्ष 19 अक्तूबर को उनका अमेरिका से फोन आया था और वहां की परिस्थितियों से अवगत कराया था तथा कहा था कि अब मैं अकेला विदेश नहीं आऊंगा बल्कि आपके साथ ही आऊँगा.... उन्होंने इस बात पर अपनी व्यथा भी व्यक्त की थी कि कुछ विद्वान् और संन्यासी कुछ के नाम भी उन्होंने बताए यहां केवल धन एकत्रित करने के उद्देश्य से आते हैं जिससे भारत की विशेषत: आर्यसमाज की छवि धूमिल होती है.... उसी दिन उन्होंनें यह भी कहा था कि मैं जनवरी में आपके यहां आऊँगा मगर इस शर्त पर कि जनवरी में ही आप भी रोजड़ आऐंगे और दूरदर्शन के लिए प्रवचनों की रिकार्डिंग भी कराऐंगे....।प्रवचनों की रिकार्डिंग के लिए वे बहुत काल से मेरे पीछे पड़े हुए थे। मैंने उन्हें वचन दिया कि हां हम भी जनवरी में अवश्य ही आऐंगे....

14 नवम्बर को रात्रि दो बजे फोन की घण्टी बजी तो लगा कि किसी ने गलती से इतनी रात गए फोन लगा दिया है मगर जब आचार्य संदीप जी ने अपने भर्राए हुए गले से बताया कि आचार्य ज्ञानेश्वर जी अब संसार में नहीं रहे तो जैसे कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। फोन कट गया था मगर मेरे लिए यह समाचार बहुत ही वेदना देने वाला था क्योंकि आचार्य जी मेरे परम मित्र थे। अत्यधिक व्यस्तताओं के होते हुए भी सत्यप्रियायति तथा मोगा की बहिन इन्दु पुरी जी के साथ उनके अन्त्येष्टि संस्कार में भी गए.... उनके पार्थिव शरीर को स्वयं अपनी आंखों से आग की लपटों में धू-धू कर जलते देखा, श्रद्धांजलि सभा में भरे मन से अपने सीमित उद्‌गार व्यक्त किए मगर मन आज भी विश्वास करने के लिए राजी नहीं है कि हमने एक अत्यधिक स्नेहिल व्यक्ति को खो दिया है.... वे एक कर्मठ कार्यकर्त्ता, योगी, चिन्तक और लेखक तो थे ही मगर एक बहुत ही अच्छे इन्सान भी थे। उनमें कार्य करने की अद्‌भुत क्षमता थी। एक बार जब ठान लेते थे तो उस कार्य को पूर्णता देकर ही रहते थे। उनकी सहृदयता और संवेदना एवं व्यवहारकुशलता अनुपम थी.... वे अद्‌भुत ऊर्जामान व्यक्तित्व थे। मैनें श्रद्धांजलि सभा में भी कहा था कि आचार्य ज्ञानेश्वर जी के रूप में हमने आज एक उच्च कोटि के चिन्तक, कर्मठ कार्यकर्त्ता और सहृदय इन्सान को खो दिया है....

मनीषियों की यह बात सत्य है कि जीवन की सार्थकता मानव सेवा करने और यशस्वी बनने में ही है। श्रद्धेय भ्राता जी ने मनीषियों की इस उक्ति को चरितार्थ किया है इसलिए वे धन्य हैं! उपनिषद् के ऋषि का सार्थक जीवन के बारे में कहना है-'अहं ब्रह्म अहं यज्ञ, अहं लोक:। अर्थात् हम महान् बनें, हमारा जीवन यज्ञमयी भावनाओं से परिपूर्ण हो और हम संसार में यशस्वी बनकर जीएं। आत्मीय आचार्य जी ने अपने जीवन में इस सार्थकता को परिपूर्ण किया है.... आज, जबकि उनकी देश व समाज को और अधिक आवश्यकता थी वे हम में से अक्स्मात् चले गए हैं.... उनकी कमी की भरपाई होना तो एकदम असंभव ही है मगर फिर भी हमें उनके जीवन से यही प्रेरणा लेनी है कि हम भी अपने मिशन के लिए समस्त ऐषणाओं को त्याग कर आत्मना समर्पण भाव से कार्य करते रहें.... 12 अक्तूबर, 2017 को उन्होंने जो अपना अन्तिम पत्र म्यांमार से लिखा है उसी में हम लोगों को प्रेरणा दे दी है कि आर्य समाज का उत्थान कैसे हो सकता है....'

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17 RNI No. 26281/74

51 कुंडीय सामवेद पारायण महायज्ञ एवं राष्ट्र रक्षा सम्मेलन सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर का 25वें वार्षिक रजत जयंती समारोह के अवसर पर सामूहिक 51 कुंडीय सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें 108 दम्पतियों ने भाग लिया। चित्र दो में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी को सम्मानित करते हुये आर्य समाज के सदस्य। नीचे चित्र तीन में सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी को सम्मानित करते हुये आर्य समाज के सदस्य एवं चित्र चार में सभा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी को सम्मानित करते हुये आर्य समाज के सदस्य। चित्र पांच में स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती सांसद सीकर एवं सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी गायिका रश्मि घई को सम्मानित करते हुये। उनके साथ खड़े हैं आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य एवं अन्य। चित्र छः में स्वामी सुमेधानन्द जी भजन संध्या के बाद आशीर्वचन देते हुये।

आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर का 25वां वार्षिक रजत जयंती समारोह का आयोजन 17 दिसम्बर रविवार से प्रातः 8.00 बजे से यज्ञ ब्रह्मा आचार्य ज्ञान प्रकाश जी की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ। गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ किया और स्वामी सुमेधानंद जी सरस्वती सांसद सीकर व सतपाल मल्होत्रा उप प्रधान आर्य समाज जी के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। रात्रि 6.00 बजे से 9.00 बजे तक भजन संध्या का आयोजन मुलखराज आर्य की स्मृति में किया गया जिसमें दीप प्रज्वलित स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, आचार्य ज्ञान प्रकाश जी, आर्य समाज के प्रधान रणजीत आर्य, ईश्वर चंद रामपाल, हर्ष लखनपाल, चौधरी हरीचंद, भूपेन्द्र उपाध्याय, श्री सुरिन्द्र अरोडा, सुभाष आर्य, ओम प्रकाश मेहता द्वारा ज्योति प्रज्वलित से शुभारम्भ किया गया। आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशिका सोनू भारती, सीमा अनमोल, सीमा मेहता, रश्मि घई व आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी ने बहुत ही मधुर भजन सुना कर सब को मंत्रमुग्ध कर झूमने पर मजबूर कर दिया। विशेष रूप से आशीर्वाद देने के लिये पधारे स्वामी सुमेधानंद जी सरस्वती सांसद सीकर ने अपने प्रवचन में कहा कि मनुष्य जीवन में कृतज्ञता बहुत बड़ा गुण है जो व्यक्तित्व को निखारता है वहीं कृतघ्नता से दूर ले जाता है। यह गुण जिस मनुष्य के अंदर है वही मनुष्य है जो अपने बड़ों के प्रति सदा आदर की भावना रखता है। यह गुण ही मनुष्य के व्यक्तित्व को महान बनाता है। भजन संध्या पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, श्रीमती गुलशन शर्मा जी, सभा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी, आर्य समाज माडल टाउन के प्रधान श्री अरविन्द घई, हिन्द पाल सेठी, रजनी सेठी, अजय महाजन, योगराज पुरी, सुरेश शास्त्री, सी.एल.कोछड़ विशेष रूप से उपस्थित हुये। आर्य समाज में सोमवार 18 दिसम्बर से 22 दिसम्बर तक प्रातः सामवेद पारायण महायज्ञ व सायं भजन प्रवचन के कार्यक्रम में पंडित जगत वर्मा जी, सोनू भारती ने मधुर भजन सुनाए एवं आचार्य ज्ञान प्रकाश जी ने बहुत ही ज्ञानवर्धक बातें कर सभी को आनन्दित किया। सत्संग भवन में बहुत बड़ी संख्या में पधार रहे सभी श्रोताओं ने कार्यक्रम का आनन्द उठाया। 23 दिसम्बर को प्रातः स्वामी (शेष पृष्ठ सात पर)

शिक्षा का प्रसार करना स्वामी दयानन्द का उद्देश्यः प्रेम भारद्वाज

आर्य माडल सीनियर सैकेंडरी स्कूल बठिंडा के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर कार्यक्रम का शुभारम्भ ज्योति प्रज्वलित कर करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी। उनके साथ खड़े हैं स्कूल के प्रधान श्री पी.डी.गोयल, सचिव अश्विनी मोंगा जी एवं अन्य जबकि चित्र दो में सभा महामंत्री जी को स्मृति चिन्ह देते हुये स्वामी सूर्यदेव जी, श्री पी.डी.गोयल, श्री गौरी शंकर जी, श्री अश्विनी मोंगा जी, श्री सुरिन्द्र गर्ग जी एवं अन्य। चित्र तीन में कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुये सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज।

आर्य माडल सीनियर सैकेंडरी स्कूल बठिंडा में दिनांक 23 दिसम्बर 2017 को वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि एस.डी.एम. साक्षी साहनी ने बच्चों को पुरस्कार वितरण किये। विशेष अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने आर्य समाज के बारे में जानकारी देते हुये बताया कि स्वामी दयानन्द का उद्देश्य सामाजिक कुरीतियों का नाश करके शिक्षा का प्रसार करना है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में इसी उद्देश्य की पूर्ति में जुटी हुई है। उन्होंने कहा कि शिक्षा मनुष्य की सनातन आवश्यकता है। एतदर्थ जितनी महत्वपूर्ण वह वर्षों पहले थी उतनी ही महत्वपूर्ण वह आज है। शिक्षा के बिना मनुष्य का गुजारा न पहले था, न आज है और न आगे होगा क्योंकि शास्त्रकार ने कहा है वंशो द्विधा विद्यया जन्मना च अर्थात् वंश एक विद्या के द्वारा मनुष्य का हाड, मांस, चर्बी, रोम, मज्जा से युक्त ढांचे का निर्माण होता है। परन्तु विद्या मनुष्य को मनुष्यता सिखाती है और मोक्ष तक का रास्ता पूर्ण करती है। सरस्वती वन्दना से शुरू कार्यक्रम में बच्चों ने रंगीलो मेहमान गीत से अभिनन्दन किया। रंगबिरंगी चमकदार कॉस्टयूम में सजे बच्चों ने चमचम पर डांस करके सबको मोहित किया जबकि केसरिया सफेद हरा ड्रेस में सजे बच्चों ने सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तान हमारा, से देशभक्ति का जज्बा जगाया। छोटी सी दादी व नानी की (शेष पृष्ठ सात पर)

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।